



आशुतोष कमल¹, डॉ० निधि आर्या², विकेश कुमार³ एवं आनन्द कुमार⁴,
¹शोध छात्र, पशुपालन एवं दुग्ध विभाग,
काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।
²एमवीएससी पशु चिकित्सा औषध विज्ञान,
पशु चिकित्सा औषध विज्ञान और विष विज्ञान विभाग,
गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड।
^{3,4} पीएचडी, शोध छात्र पशुपालन एवं दुग्ध विभाग,
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – ashutoshkamal.bhu@gmail.com

गर्भवती गाय की देखभाल गाय अपने गर्भधारण करने के लगभग 281 दिन बाद बच्चा देती है। अच्छे बच्चे प्राप्त करने के लिए कृषक भाई हमेशा अपनी अच्छी गाय को अच्छे नस्ल के बैल से क्रॉस कराना चाहिये तथा क्रॉस होने की तिथि को ब्रीडिंग रजिस्टर में नोट कर लेना चाहिए जिससे ब्याने की तिथि का अनुमान लगाया जा सके और इस अनुसार गाय को सही रख रखाव किया जा सके। इस बीच में गाय के साथ अत्यन्त मृदु व्यवहार करना चाहिए। ऐसी गायों को न तो बहुत घुमाया ही जाता है, और न ही दौड़ाया जाता है। हल्का फुल्का व्यायाम हेतु गाय को खुले परिवेश में छोड़ना सही रहता है। इस बात की विशेष सावधानी रखनी चाहिए कि गर्भवती गाय को कोई दूसरे पशु से झगड़ा न कर पाए।

गाय के गर्भधारण के समय ध्यान देने वाली प्रमुख बातें

:-

गर्भवती गाय का आहार :- गर्भ के दौरान भ्रूण अपने विकास अवस्था में होता है वह आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए अपनी माँ पर निर्भर रहता है। गर्भवती गाय को उसके जीवन निर्वाह राशन और वर्धक राशन के अतिरिक्त उसके पेट में पल रहे भ्रूण के अच्छे विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्व उसे दिए जाने वाले आहार में उपलब्ध करने की आवश्यकता होती है।

अतः यह कहना गलत नहीं है कि गर्भ में ही बच्चे का पालन पोषण शुरू हो जाता है। जिन गायों को गर्भकाल में उत्तम आहार जैसे फलीदार हरे चारे, विटामिन और प्रोटीन युक्त दाना नहीं मिलता पैदा होने के बाद इन बच्चों का शारीरिक विकास अच्छा नहीं होता या तो बच्चे जन्म लेते ही मर जाते हैं या इतने कमजोर हो जाते हैं कि वे बीमारियों को सहन नहीं कर पाते अतः गर्भकाल में गायों को इस लिए खिलाया पिलाया जाता है ताकि वे मजबूत, अच्छी वृद्धि करने वाला बच्चा पैदा कर सकें और अधिक दूध उत्पादन कर सकें।

- **गर्भवती गाय को आमतौर पर** 30-35 किलोग्राम हरा चारा, 3 से 4 किलोग्राम सूखा चारा, 2.5 किलोग्राम दाना और लवण मिश्रण देना चाहियें।
- **पांच से छह माह का गर्भ हो जाने पर** गाय को निर्वाह और वर्धक राशन के साथ पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस, युक्त आहार देना प्रारम्भ कर देना चाहिए।
- **ब्याने के दो से ढाई महीने पूर्व** गाय का दूध सुखाना अति आवश्यक होता है इस लिए दाना की मात्रा धीरे धीरे कम कर दें ताकि गाय 7-10 दिन में दूध देना बन्द कर दें। ऐसा करना इस लिए जरूरी होता है क्योंकि भ्रूण का अधिकतर विकास अंतिम 2.5 माह में होता है और ऐसे भ्रूण

के विकास में अत्यधिक पोषण की जरूरत होती है।

- **ब्याने के 6 सप्ताह पूर्व** गाय को अच्छे दिहन रखे की पूर्ण पोषण युक्त आहार के साथ कम से कम 5 किलोग्राम चारा मिलना चाहिए।
- **ब्याने के 2 सप्ताह पूर्व** यह समय अत्यन्त महत्वपूर्ण समय होता है इस समय ध्यान रखे यदि आपकी गाय 8 किलोग्राम से कम दूध देती है तो उसे अतिरिक्त राशन न दें, हरा चारा और मिनिरल्स देते रहे और यदि आपकी गाय 25 लीटर तक या इससे अधिक दूध देती है तो उसे अंतिम 2 सप्ताह पूर्व 11 किलोग्राम दाना प्रतिदिन खिलाने की आवश्यकता होगी।

पोषण तथा खनिज मिश्रण :- दूध ज्वर और कीटोसिस जैसी बीमारियों के जोखिम को कम करने और पर्याप्त दूध उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त आहार प्रदान करें। हरा चारा, मोटा चारा, सांद्रण और 30-50 ग्राम नमक, 60 ग्राम खनिज मिश्रण, 30 ग्राम अस्थिचूर्ण और 15 ग्राम खड़िया का दैनिक राशन में शामिल होना अतिआवश्यक है। कम से कम 75-80 लीटर प्रतिदिन के हिसाब से चौबीसों घंटे ताजा साफ पीने का पानी उपलब्ध कराएँ। ध्यान रहे पानी साफ व जीवाणु रहित रहे।

स्थान और आश्रय :- गर्भवती गाय को अन्य गायों से अलग रखना चाहिए या फिर अन्य गर्भवती गायों के बाड़े में रखना चाहिए। ध्यान रहे गाय को आराम से खड़े होने और बैठने के लिए पर्याप्त जगह प्रदान करें। गाय को जिस जगह पर आश्रय दिया गया हो वो साफ और हवादार हो जो गाय को बाहरी गर्मी, ठंड और बारिश से बचा सकें। जब गाय बच्चे को जन्म देने वाली हो तो उस गाय को अन्य गायों से अलग किसी साफ और सूखे कमरे में रखना चाहिए, यदि फर्श कच्ची है तो उसमें पराली की बिछाली का प्रयोग करना चाहिए। प्रयोग के बाद इस बिछाली को जला कर नष्ट कर देना चाहिए।

तनाव और आराम :- गर्भवती गाय को अधिक से अधिक आराम पहुँचाने वाले प्रबन्ध करना चाहिए इस दौरान गाय को दौड़ाना नहीं चाहिए न ही कोई लम्बी

दूरी तय करानी चाहिए, थकान होने और तनाव आने से बच्चे और गाय के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। गाय को ठण्ड और मौसम में होने वाले परिवर्तन के समय उचित प्रबंध करना चाहिए, अत्यधिक ठण्ड होने पर कमरे में सूखी पराली की बिछाली, ओढ़ने के लिए अच्छी और साफ ओढ़नी का इस्तेमाल करना चाहिए, कमरे को गर्म रखना परम आवश्यक है।

गर्भवती गायों की देखभाल में निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए :-

- 1- ब्याने की अनुमानित तिथि से डेढ़ से दो माह पूर्व गाय को दुहना बन्द कर देना चाहिए ताकि अगले ब्यांत में गाय अधिक दूध उत्पादित करे साथ ही अच्छा व स्वस्थ बच्चा जन्म लें। इस बात का विशेष ध्यान रक्खा जाय की पशुशाला में कोई दूसरी गाय या बैल गर्भवती गाय से न लड़े।
- 2- गर्भवती गायों को ऐसी गायों के साथ नहीं रखना चाहिए जिनका गर्भपात हुआ हो, और न ही उनके साथ चरने को ले जाना चाहिए।
- 3- कुत्ते और जंगली जानवरों के आक्रमण से बचाना चाहिए, इनके भय आने मात्र से गाय और बच्चे दोनों को नुकसान हो सकता है।
- 4- शेड में सेंधा नमक का ढेला रख देना चाहिए जिससे पशु अपनी इच्छा अनुसार चाट सके जिसे पशु को मिनिरल्स प्राप्त हो जाता है जो पानी पीने की क्षमता को बढ़ाता है।
- 5- गाय के नीचे सूखे पयाल या पराली को बिछाना चाहिए गन्दी होने पर इसे हटा कर नयी पराली को बिछाना चाहिए।
- 6- शेड के अन्दर सफाई का विशेष ध्यान देना चाहिए, रोजाना फार्म एक्टिविटी में सफाई को ध्यान पूर्वक करना चाहिए।

किसी बीमारी के लक्षण दिखने पर नजदीकी पशुचिकित्सक से सलाह लेकर उचित उपचार करें।